an>

Title: Regarding the condition of ASHA and Anganwadi workers in the country.

श्रीमती रंजीत रंजन (सुपौल) : अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से एक रिक्वेस्ट जरूर करूंगी कि अगर जीरो अवर की यह परंपरा हुई तो हम विपक्ष में बैठे हैं, हर जीरो अवर में आप के खिलाफ ही मैटर शुरू हो जाएगा, हर जीरो अवर में यही प्वाइंट उठाना शुरू कर देंगे।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप अपनी बात कहिए।

श्रीमती रंजीत रंजन : मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहती हूं कि मध्याह्न भोजन के रसोइया होते हैं, आशा महिलाओं को प्रसूति में अस्पताल लेकर जाती हैं और आंगवाड़ी की सहायिका और सेविकाओं के दर्द को रखना चाहूंगी।

मध्याह्न भोजन में रसोइया, जो महिलाएं भी होती हैं और पुरुष्Âा भी होते हैं, जो खाना बनाते हैं, उनको मात्र साढ़े बारह सौ रुपये मिलते हैं। यह कहां का न्याय है कि एक दिन काम के 50 रुपये भी, 1500 रुपये भी उनको नहीं दिए जाते हैं। मैं केन्द्र सरकार से निवेदन करूंगी कि इस महंगाई को देखते हुए, आप महंगाई कम नहीं कर पाये, रसोइया को कम से कम डेली 200 रुपये मिलना चाहिए, कम से कम उन्हें 3000 रुपये महीना मिलना चाहिए।

'आशा' जिनका कोई मानदेय तय नहीं किया होता है, वे प्रेगनेंट विमेन को लगातार नौ महीने तक अपने ऑब्जर्वेशन में रखती हैं, तीन बार अस्पताल ले कर जाती हैं, फिर उनको हफ्ते में पोलियो के ड्रॉप और इंजैक्शन लगवाएंगी, उनको छः सौ रुपये मिलते हैं और खिलाने-पिलाने में मात्र ढ़ाई सौ रुपये मिलते हैं। वह अपने बच्चों को किस तरह से पालेंगी। उनसे इलैक्शन में काम लिया जाता है, उनसे पोलियो ड्रॉप पिलाने का भी काम लिया जाता है तो क्या यह गरीबी का मजाक नहीं उड़ाया जाता है कि उनके पास कोई काम नहीं है, इसलिए वह छः सौ रुपये के लिए काम करती हैं। इतना ही नहीं अगर वह महिला को अस्पताल में लेकर आती है और वह खुद बाथरूम या शौचालय चली गयी, उसके न रहते हुए बच्चा हो जाता है तो उसको उस छः सौ रुपये से भी अलग कर दिया जाता है, नहीं दिया जाता है कि 'आशा' वहां पर उपस्थित नहीं थी।

जो सहायिका और सेविकाएं हैं, हम लोगों ने बहुत कहा तो मानदेय 3000 रुपये से 3750 रुपये हो गया और सहायिका के मानदेय 2240 रुपया हो गया। उन्हें 21 रजिस्टरों में पंजीकृत किया जाता है, उन्हें ब्लॉक में हर हफ्ते बुलाया जाता है, जिसका किराया भी नहीं दिया जाता है और अन्य 50 कार्य उनसे कराये जाते हैं।

मैं फिर आपके माध्यम से कहूंगी कि केन्द्र सरकार को इन तीनों पर, उनकी गरीबी के साथ मजाक हो रहा है, इन तीनों का मानदेय बढ़ाना चाहिए और 'आशा' को परमानेंट करना चाहिए। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष :

श्री राजीव सातव,

कुँवर पुÂष्पेन्द्र सिंह चन्देल,

श्री चन्द्र प्रकाश जोशी,

श्री भैरों प्रसाद मिश्र,

श्री अश्विनी कुमार चौबे,

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत और

श्री हरिओम सिंह राठौड़ को श्रीमती रंजीत रंजन द्वारा उठाए गए विÂषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।